B.M.A. College Baheri Darbhanga (L.N.M.U)
B.A. (Hons) Part - II Paper - IV Economics

19-08-2020

Dr. S. K. Singh
Deptt of Economics

आर्थिक सम्बन्धों का विनिमय दर पर प्रभाव,
(Effects of Economic Relations)

यह सिद्धांत इस तथ्य की ओर ध्यान नहीं देता है, कि दो देशों में कीमतें के स्थिर रहते हुए भी इन दोनों देशों के आर्थिक सम्बंधों में परिवर्तन होने से विदेशी विनिमय दर में परिवर्तन हो सकता है। उदाहरणार्थ, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में किसी तीसरे प्रतियोगी देश के प्रवेश करने के परिणामस्वरूप इन दोनों देशों के आयातों तथा निर्यातों पर प्रभाव पड़ने से विदेशी विनिमय दर भी प्रभावित होती है।

रॉगनार नर्क्स ने इस सिद्धांत की इस आधार पर आलोचना की है कि यह केवल मूल्य स्तर में परिवर्तनों को प्रमुख मापदण्डों के रूप में स्वीकार करता है जबकी विदेशी विनिमय की मांग को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण तत्वों की अवहेलना करता है। उनके अनुसार यह सिद्धांत मांग को केवल मूल्य का ही फलन मानता है और व्यापार चक्र के कारण समग्र आय और समग्र व्यय में हुए अति परिवर्तनों की अवहेलना करता है, जिसके कारण व्यापार की मात्रा और मूल में वस्तुओं के मूल्यों या मूल्यसम्बंधों के स्थिर रहते हुए भी भारी उतार चढ़ाव होता है"

निष्कर्ष (Conclusion) - उपरोक्त आलोचनाओं के होते हुए भी क्रय शक्ति समता नियम विदेशी विनिमय दर के निर्धारण की शक्तियों की व्याख्या के लिए अव्यावहारिक नहीं है अतः इसका परित्याग नहीं किया जाना चाहिए। अपूर्णताओं तथा त्रुटियों के बावजूद भी इस सिद्धांत का मौद्रिक नीति के दृष्टिकोण से व्यवहारिक महत्व है। यह सिद्धांत विदेशी विनिमय दर को स्थिर रखने के लिए न करने योग्य कार्यों के सम्बंध में समस्त देशों को चेतावनी देता है। सन् 1925 में इंगलैंड पौंड स्टर्लिंग का मूल्य प्रचलित तथा उचित मूल्य से अधिक निश्चित किया था। इस सिद्धांत के अनुसार पौण्ड- स्टर्लिंग का ऊँचा विनिमय मूल्य केवल उसी समय स्थिर रह सकता था जबकी इंगलैंड में मूल्य विश्व- मूल्यों की अपेक्षा कम होते है। इसका परिणाम यह हुआ कि पौण्ड- स्टर्लिंग की विदेशी विनिमय दर आकुल होने लगी थी तो उस समय सरकार ने बाध्य होकर आकर्षक बैंक दर में वृद्धि करके विदेशी पूंजी को आकर्षित करने का प्रयास किया।

प्रेरित तथा स्वायत्त विनियोग

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन अथवा आय के परिवर्तनों द्वारा निर्धारित होने वाला विनियोग प्रेरित विनियोग (induced investment) होता है। समाज में व्यक्तियों की उपभोग्य आय (disposable income) में वृद्धि होने पर वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए प्रभावपूर्ण माँग में वृद्धि होती है, जिसकी पूर्ति करने के लिए उद्यमकर्ता विनियोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित होता है। इस प्रकार, प्रेरित विनियोग की मात्रा आय में वृद्धि अथवा कमी के साथ-साथ घटती-बढ़ती रहती है। दूसरे शब्दों में प्रेरित विनियोग आय-सापेक्ष (income elastic) होता है। अल्पकाल में पूँजी-उत्पादन के स्थिर होने के कारण आय तथा प्रेरित विनियोग के मध्य एक सीधा अनुपाती सम्बंध होता है।

स्वायत्त विनियोग (autonomous investment) आय के परिवर्तनों द्वारा प्रभावित नहीं होता है अर्थात् आय-निरपेक्ष (income inelastic) होता है। वहाँ पूँजी व्यय (capital expenditure) जो प्रत्यक्ष रूप में समग्र माँग में होने वाले परिवर्तनों द्वारा प्रभावित नहीं होता है, स्वायत्त विनियोग कहलाता है। नवीन प्रक्रियाएँ, आविष्कार, जनसंख्या की वृद्धि, युद्ध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थितियाँ श्रम-आन्दोलन, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, दीर्घकालीन सम्भावनाएँ आदि प्रमुख कारण स्वायत्त विनियोग की मात्रा को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार आय की मात्रा स्थिर रहने पर स्वायत्त विनियोग में परिवर्तन हो सकता है तथा आय में परिवर्तन होने पर भी स्वायत्त विनियोग की मात्रा स्थिर रह सकती है। आर्थिक विकास के उद्देश्य से सड़कों का निर्माण, जन-कल्याण के लिए अस्पतालों का निर्माण, अनुसंधान व विकास पर किया जाने वाला दीर्घकालीन विनियोग स्वायत्त विनियोग के उदाहरण हैं।